श्रीमती पानादेवी सेखानी स्मृति संघ सेवा पुरस्कार, 2009

''झूमरमल समाज का विलक्षण व्यक्ति है, जंवरीमल बैंगानी को बताया मजबूत आदमी''

बीदासर, 25 अप्रैल।

प्रतिवर्ष जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित एवं नेमचन्द जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रयोजित 'संघ सेवा पुरस्कार' उन व्यक्तियों को दिया जाता है जो संघ एवं संघपति की समर्पण भाव से सेवा करते हैं। इसी श्रंखला में आज आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में इस वर्ष का संघ सेवा पुरस्कार बीदासर के श्री झूमरमल बैंगानी एवं श्री जंवरीमल बैंगानी को प्रदान किया गया। ट्रस्ट के प्रायोजक श्री जेसराज सेखानी एवं जैन विश्व भारती के उपमंत्री श्री विजय सिंह चौरड़िया ने बैंगानी बंधुओं को प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार राशि का चेक भेंट किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि धर्मसंघ में उस व्यक्ति का महत्त्व होता है जिसमें कुछ कसौटियां होती है जिस पर वह खरा उतरता है। उनके लिए पहली कसौटी है धर्मसंघ के लिए पूर्ण समर्पण। दूसरी कसौटी संघपति के प्रति पूर्ण समर्पण और तीसरी कसौटी है साधु–साध्वियों के प्रति श्रद्धा आदर का भाव। जो बहुत आवश्यक है। धर्मसंघ के प्रति साधु–साध्वियों की उपेक्षा करना अच्छा नहीं है। चौथी कसौटी है समाज में टूटन, बिखराव नहीं होना चाहिए। समाज का हित का चिंतन होना चाहिए। पांचवी कसौटी है सेवा का भाव होना चाहिए। जो इनमें उत्तीर्ण होता है वह व्यक्ति खरा उतरता है वह सेवाभावी श्रावक होता है।

आचार्यश्री ने पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता श्री झूमरमल बैंगानी एवं श्री जंवरीमल बैंगानी का उल्लेख करते हुए फरमाया कि यह सुंदर प्रसंग है कि दोनों भाई शासनसेवी है जो धर्मसंघ का सबसे बड़ा संबोधन है। ये दोनों मेरे स्वास्थ्य के लिए सतत जागरूक रहते हैं। स्वास्थ्य सेवा में ये पूर्ण समर्पित रहते हैं। झूमरमल एक समाज का विलक्षण व्यक्ति है। दूसरा भाई जंवरी मजबूत आदमी है। यह अनुकरणीय है कि पद पर रहा तो ठीक नहीं रहा तो भी ठीक दोनों स्थितियों में संतुलन रखा। केवल महासभा की ही नहीं धर्मसंघ की सेवा करता रहा।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि यह पुरस्कार एक प्रेरणा है। यह प्रेरणा का प्रसंग है कि सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। केवल पद की आकांक्षा आए तो समाज का और स्वयं का भी हित नहीं होता।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि 'जीवों का परस्पर सहयोग से काम चलता है निरपेक्ष होकर जीना कठिन हैं सापेक्षता के सूत्र के आधार पर ही जीवन जीया जा सकता है। सापेक्षता का आधारभूत तथ्य है सेवा। जहां सेवा नहीं है तो फिर समाज में टूटन आने की संभावना रहती हैं। सेवा के साथ करूणा व कर्त्तव्य का भाव होना चाहिए। कर्त्तव्य भावना न हो तो सेवा नहीं हो सकती। जो गृहस्थ समाज और आत्म धर्म दोनों को विवेचित कर जागरूक रहता है वह ग्राहस्थ में परिपूर्ण दायित्व ग्रहण करता है।

मुनिश्री किशनलालजी ने बैंगानी बंधुओं जैसे श्रावक कार्यकर्त्ता समाज में विकसित हाने की जरूरत बताई, मुनिश्री मोहजीतकुमारजी ने अपने विचार रखे।

इस अवसर पर जैन विश्वभारती के उपमंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया ने पुरस्कार प्राप्तकर्त्ताओं का परिचय प्रस्तुत करते हुए जैन विश्व भारती की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर श्री रणजीतसिंह बैद ने झूमरमल बैंगानी को तथा श्री पन्नालाल बैद ने श्री जंवरीमल बैंगानी को अभिनन्दन पत्र वाचन करते हुए भेंट किया। श्री लक्ष्मीपत सेखानी, बिमला सेखानी अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री चौथमल बोथरा, तेरापंथ महिला मण्डल बीदासर की अध्यक्षा श्रीमती शांतिदेवी बांठिया एवं मोहनीदेवी चौरड़िया ने पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता को साहित्य भेंट कर सम्मान किया।

इस अवसर पर प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल सेखानी व मंत्री श्री कन्हैयाला गिड़िया ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन वंदना कुण्डलिया ने किया।

जीवन विज्ञान का मूल आधार है अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान : मुनि किशनलाल

तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवासमवरण में प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलाल बताया कि जीवन विज्ञान का मूल आधार है अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान। अणुव्रत द्वारा विद्यार्थियों को संयम सिखाया जाता है। प्रेक्षाध्यान से एकाग्रता और भावों में रूपान्तरण। अणुव्रत गीत और प्रेक्षागीत का प्रशिक्षण दिया गया। दोनों गीतों के भावों को विस्तार से समझाया गया। कर्णाटक से आये प्रशिक्षु जैन विश्व भारती के अवलोकन के लिए गये, वहां उन्हें डॉ. मंगलप्रज्ञाजी संबोधित करेंगी।

प्रिंस पब्लिक स्कूल के प्रींसिपल सीमा और विद्यार्थियों, पुज्यवरों का मंगल आशीर्वाद लिया। युवाचार्यश्री ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए चार सूत्र बताये। सत्य का पालन करना किसी को कष्ट नहीं पहुंचाना, नकल नहीं करना, चोरी नहीं करने वाला बालक श्रेष्ठ होता हे। मुनि किशनलाल ने विद्यार्थियों का जीवन विज्ञान प्रशिक्षण दिया और अणुव्रत घोष सिखाए संयम ही जीवन है, निज पर शासन फिर अनुशासन, विद्या का वरदान है जीवन विज्ञान हम सब एक हैं, हम सब अनेक हैं। घोष का उच्चारण करने से प्रसन्न मन से विद्यार्थी सभा विसर्जित की गई।